Ecc

Chapter 3

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

ס	הַשָּׁמָֽיִם׃	תָּחַת	חֵפֶץ	לְכָל־	וְעֵת	זְמָן	לַכֹּל	1
—	आकाश-के	नीचे	इच्छा-के-लिए	हर-	और-घड़ी	समय	सब-के-लिए	
	H8064	H8478	H2656	H3605	H6256	H2165	H3605	

हर बात का एक उचित समय होता है। और इस धरती पर हर बात एक उचित समय पर ही घटित होगी।

נָטוּעַ׃	לַעֲקוֹר	וְעֵת	לָטַעַת	עֵת	לָמוּת	וְעֵת	לָלֶדֶת	עֵת	2
रोपे-हुए-को	उखाड़ने-का	और-समय	रोपने-का	समय	मरने-का	और-समय	जन्म-का	समय	
H5193		H6256	H5193	H6256	H4191	H6256	H3205	H6256	

जन्म लेने का एक उचित समय निश्चित है, और मृत्यु का भी। एक समय होता है पेड़ों के रोपने का, और उनको उखाड़ने का।

לִבְנוֹת׃	וְעֵת	לִפְרוֹץ	עֵת	לִרְפּוֹא	וְעֵת	לַהֲרוֹג	עֵת	3
बनाने-का	और-समय	तोड़ने-का	समय	चंगा-करने-का	और-समय	मारने-का	समय	
H1129	H6256	H6555	H6256	H7495	H6256	H2026	H6256	

घात करने का होता है एक समय, और एक समय होता है उसके उपचार का। एक समय होता है जब ढहा दिया जाता, और एक समय होता है करने का निर्माण।

רְקוֹד׃	וְעֵת	סְפוֹד	עֵת	לִשְׂחוֹק	וְעֵת	לִבְכּוֹת	עֵת	4
नाचने-का	और-समय	शोक-का	समय	हँसने-का	और-समय	रोने-का	समय	
H7540	H6256	H5594	H6256	H7832	H6256	H1058	H6256	

एक समय होता है रोने—विलाप करने का, और एक समय होता है करने का अट्टाहस। एक समय होता है होने का दुःख मग्न, और एक समय होता है उल्लास भरे नाचका।

וְעֵת	לַחֲבֹק	עֵת	אֲבָנִים	כְּנוֹס	וְעֵת	אֲבָנִים	לְהַשְׁלִיךְ	עֵת	5
और-समय	गले-लगाने-का	समय	पत्थरों-को	इकट्ठा-करने-का	और-समय	पत्थरों-को	फेंकने-का	समय	
H6256	H2263	H6256	H0068	H3664	H6256	H0068	H7993	H6256	

מֵחַבֵּק׃	לִרְחֹק
गले-लगाने-से	दूर-रहने-का
H2263	H7368

एक समय होता है जब हटाए जाते हैं पत्थर, और एक समय होता है उनके एकत्र करने का। एक समय होता है बाध आलिंगन में किसी के स्वागत का, और एक समय होता है, जब स्वागत उन्हीं का किया नहीं जाता है।

לְהַשְׁלִיךְ׃	וְעֵת	לִשְׁמוֹר	עֵת	לְאַבֵּד	וְעֵת	לְבַקֵּשׁ	עֵת	6
फेंकने-का	और-समय	रखने-का	समय	खोने-का	और-समय	खोजने-का	समय	
H7993	H6256	H8104	H6256	H0006	H6256	H1245	H6256	

एक समय होता है जब होती है किसी की खोज, और आता है एक समय जब खोज रूक जाती है। एक समय होता है वस्तुओं के रखने का, और एक समय होता है दूर फेंकने का चीज़ों को।

לְדַבֵּר׃	וְעֵת	לַחֲשׁוֹת	עֵת	לִתְפּוֹר	וְעֵת	לִקְרוֹעַ	עֵת	7
बोलने-का	और-समय	चुप-रहने-का	समय	सीने-का	और-समय	फाड़ने-का	समय	
H1696	H6256	H2814	H6256	H8609	H6256	H7167	H6256	

होता है एक समय वस्त्रों को फाड़ने का, फिर एक समय होता जब उन्हें सिया जाता है। एक समय होता है साधने का चुप्पी, और होता है एक समय फिर बोल उठने का।

8	עֵת	לֶאֱהֹב	וְעֵת	לִשְׂנֹא	עֵת	מִלְחָמָה	וְעֵת	שָׁלוֹם׃	ס
	समय	प्रेम-करने-का	और-समय	घृणा-करने-का	समय	युद्ध-का	और-समय	शांति-का	—
	H6256	H0157	H6256	H8130	H6256	H4421	H6256	H7965	

> एक समय होता है प्यार को करने का, और एक समय होता जब घृणा करी जाती है। एक समय होता है करने का लड़ाई, और होता है एक समय मेल का मिलाप का।

9	מַה־	יִּתְרוֹן	הָעוֹשֶׂה	בַּאֲשֶׁר	הוּא	עָמֵל׃
	क्या-	लाभ	काम-करनेवाले-को	उसमें-जिसमें	वह	परिश्रम-करता-है
	H4100	H3504			H1931	

> क्या किसी व्यक्ति को अपने कठिन परिश्रम से वास्तव में कुछ मिल पाता है? नहीं। क्योंकि जो होना है वह तो होगा ही।

10	רָאִיתִי	אֶת־	הָעִנְיָן	אֲשֶׁר	נָתַן	אֱלֹהִים	לִבְנֵי	הָאָדָם	לַעֲנוֹת	בּוֹ׃
	मैंने-देखा	—	कार्य	जो	दिया-है	परमेश्वर-ने	पुत्रों-को	मनुष्य-के	लगे-रहने-के-लिए	उसमें
	H7200	H0853	H6045		H5414	H0430		H0120		

> मैंने वह कठिन परिश्रम देखा है जिसे परमेश्वर ने हमें करने के लिये दिया है।

11	אֶת־	הַכֹּל	עָשָׂה	יָפֶה	בְעִתּוֹ	גַּם	אֶת־	הָעֹלָם	נָתַן	בְּלִבָּם	מִבְּלִי
	—	सब-कुछ	बनाया-है	सुंदर	उसके-समय-में	भी	—	अनन्तता	रखी-है	उनके-मन-में	बिना-
	H0853	H3605		H3303	H6256	H1571	H0853	H5769	H5414		H1097

אֲשֶׁר	לֹא־	יִמְצָא	הָאָדָם	אֶת־	הַמַּעֲשֶׂה	אֲשֶׁר־	עָשָׂה	הָאֱלֹהִים	מֵרֹאשׁ	וְעַד־	סוֹף׃
कि	नहीं-	पाए	मनुष्य	—	कार्य-को	जो-	किया-है	परमेश्वर-ने	आरम्भ-से	और-	अन्त-तक
	H3808	H4672	H0120	H0853	H4639			H0430		H5704	H5490

> अपने संसार के बारे में सोचने के लिये परमेश्वर ने हमें क्षमता प्रदान की है। परन्तु परमेश्वर जो करता है, उन बातों को पूरी तरह से हम कभी नहीं समझ सकते। फिर भी परमेश्वर हर बात, उचित और उपयुक्त समय पर करता है।

12	יָדַעְתִּי	כִּי	אֵין	טוֹב	בָּם	כִּי	אִם־	לִשְׂמוֹחַ	וְלַעֲשׂוֹת	טוֹב	בְּחַיָּיו׃
	मैंने-जाना	कि	नहीं-है	भलाई	उनमें	सिवाय-	कि-	आनन्दित-होना	और-करना	भलाई	अपने-जीवन-में
	H3045		H0369					H8055			

> मैंने देखा है कि लोगों के लिये सबसे उत्तम बात यह है कि वे प्रयत्न करते रहें और जब तक जीवित रहें आनन्द करते रहें।

13	וְגַם	כָּל־	הָאָדָם	שֶׁיֹּאכַל	וְשָׁתָה	וְרָאָה	טוֹב	בְּכָל־	עֲמָלוֹ	מַתַּת
	और-भी	हर-	मनुष्य	कि-वह-खाए	और-पीए	और-देखे	भलाई	सब-	उसके-परिश्रम-में	दान
	H1571	H3605	H0120	H0398	H8354	H7200		H3605	H5999	H4991

אֱלֹהִים	הִיא׃
परमेश्वर-का	है-यह
H0430	H1931

> परमेश्वर चाहता है कि हर व्यक्ति खाये पीये और अपने कर्म का आनन्द लेता रहे। ये बातें परमेश्वर की ओर से प्राप्त उपहार हैं।

14	יָדַעְתִּי	כִּי	כָּל־	אֲשֶׁר	יַעֲשֶׂה	הָאֱלֹהִים	הוּא	יִהְיֶה	לְעוֹלָם	עָלָיו	אֵין	לְהוֹסִיף
	मैंने-जाना	कि	सब-	जो	करता-है	परमेश्वर	वह	होगा	सदा	उसपर	नहीं-है	जोड़ना
	H3045		H3605			H0430	H1931	H1961	H5769		H0369	H3254

וּמִמֶּנּוּ	אֵין	לִגְרֹעַ	וְהָאֱלֹהִים	עָשָׂה	שֶׁיִּרְאוּ	מִלְּפָנָיו׃
और-उससे	नहीं-है	घटाना	और-परमेश्वर-ने	किया-है	ताकि-डरें	उसके-सामने-से
	H0369	H1639	H0430		H3372	H6440

> मैं जानता हूँ कि परमेश्वर जो कुछ भी घटित करता है वह सदा घटेगा ही। लोग परमेश्वर के काम में से कुछ घटी भी वृद्धि नहीं कर सकते और इसी तरह लोग परमेस्शवर के काम में से कुछ घटी भी नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया कि लोग उसका आदर करें।

15

אֶת־	יְבַקֵּשׁ	וְהָאֱלֹהִים	הָיָה	כְּבָר	לִהְיוֹת	וַאֲשֶׁר	הוּא	כְּבָר	שֶׁהָיָה	מַה־
—	खोजता-है	और-परमेश्वर	हो-चुका-है	पहले-से	होना-है	और-जो	वही	पहले-से	हो-चुका-है	जो-
H0853	H1245	H0430	H1961	H3528	H1961		H1931	H3528	H1961	H4100

נִרְדָּף׃
भगाए-हुए-को
H7291

> जो अब हो रहा है पहले भी हो चुका हैं। जो कुछ भविष्य में होगा वह पहले भी हुआ था। परमेश्वर घटनाओं को बार—बार घटित करता है।

16

שָׁמָּה	הַצֶּדֶק	וּמְקוֹם	הָרֶשַׁע	שָׁמָּה	הַמִּשְׁפָּט	מְקוֹם	הַשֶּׁמֶשׁ	תַּחַת	רָאִיתִי	וְעוֹד
वहाँ	धार्मिकता-के	और-स्थान-में	दुष्टता	वहाँ	न्याय-के	स्थान-में	सूर्य-के	नीचे	मैंने-देखा	और-फिर
H8033	H6664	H4725	H7562	H8033	H4941	H4725	H8121	H8478	H7200	H5750

הָרֶשַׁע׃
दुष्टता
H7562

> इस जीवन में मैंने ये बातें भी देखी हैं। मैंने देखा है कि न्यायालय जहाँ न्याय और अच्छाई होनी चाहिये, वहाँ आज बराई भर गई है।

17

עֵת	כִּי־	הָאֱלֹהִים	יִשְׁפֹּט	הָרָשָׁע	וְאֶת־	הַצַּדִּיק	אֶת־	בְּלִבִּי	אֲנִי	אָמַרְתִּי
समय	क्योंकि-	परमेश्वर	न्याय-करेगा	दुष्ट-को	और-	धर्मी-को	—	अपने-मन-में	मैंने	मैंने-कहा
H6256		H0430	H8199	H7563	H0853	H6662	H0853		H0589	H0559

שָׁם׃	הַמַּעֲשֶׂה	כָּל־	וְעַל	חֵפֶץ	לְכָל־
वहाँ	कार्य-के-लिए	हर-	और-	इच्छा-के-लिए	हर-
H8033	H4639	H3605		H2656	H3605

> इसलिये मैंने अपने मन से कहा, “हर बात के लिये परमेश्वर ने एक समय निश्चित किया है। मनुष्य जो कुछ करते हैं उसका न्याय करने के लिये भी परमेश्वर ने एक समय निश्चित किया है। परमेश्वर अच्छे लोगों और बुरे लोगों का न्याय करेगा।”

18

וְלִרְאוֹת	הָאֱלֹהִים	לְבָרָם	הָאָדָם	בְּנֵי	דִּבְרַת	עַל־	בְּלִבִּי	אֲנִי	אָמַרְתִּי
और-देखने-को	परमेश्वर-ने	परखने-को-उन्हें	मनुष्य-के	पुत्रों-के	मामले-के	विषय-में-	अपने-मन-में	मैंने	मैंने-कहा
H7200	H0430	H1305	H0120		H1700			H0589	H0559

לָהֶם׃	הֵמָּה	בְּהֵמָה	שְׁהֵם־
उनके-लिए	हैं-वे	पशु	कि-वे-
H1992	H1992	H0929	H1992

> लोग एक दूसरे के प्रति जो कुछ करते हैं उनके बारे में मैंने सोचा और अपने आप से कहा, “परमेश्वर चाहता है कि लोग अपने आपको उस रूप में देखें जिस रूप में वे पशुओं को देखते हैं।”

19

זֶה	כְּמוֹת	לָהֶם	אֶחָד	וּמִקְרֶה	הַבְּהֵמָה	וּמִקְרֶה	הָאָדָם	בְּנֵי־	מִקְרֶה	כִּי
यह	जैसे-मरता-है	उनको	एक	और-घटना	पशु-की	और-घटना	मनुष्य-के	पुत्रों-की-	घटना	क्योंकि
H2088	H4194		H0259	H4745	H0929	H4745	H0120		H4745	

כִּי	אָיִן	הַבְּהֵמָה	מִן־	הָאָדָם	וּמוֹתַר	לַכֹּל	אֶחָד	וְרוּחַ	זֶה	מָוֶת	כֵּן
क्योंकि	कुछ-नहीं	पशु	से-	मनुष्य-को	और-लाभ	सब-को	एक	और-साँस	वह	मरता-है	वैसे
	H0369	H0929		H0120	H4195	H3605	H0259	H7307	H2088	H4194	

הַכֹּל׃	הָבֶל׃
सब-कुछ	व्यर्थता
H3605	H1892

> क्या एक व्यक्ति एक पशु से उत्तम हैं? नहीं। क्यों? क्योंकि हर वस्तु नाकारा है। मृत्यु जैसे पशुओं को आती है उसी प्रकार मनुष्यों को भी। मनुष्य और पशु एक ही श्वास लेते हैं। क्या एक मरा हुआ पशु एक मरे हुए मनुष्य से भिन्न होता है?

שָׁב	וְהַכֹּל	הֶעָפָר	מִן־	הָיָה	הַכֹּל	אֶחָד	מָקוֹם	אֶל־	הוֹלֵךְ	הַכֹּל	20
लौटता–है	और–सब–कुछ	मिट्टी	से–	था	सब–कुछ	एक	स्थान	की–ओर–	जाता–है	सब–कुछ	
H7725	H3605	H6083		H1961	H3605	H0259	H4725	H0413	H1980	H3605	

הֶעָפָר׃	אֶל־
मिट्टी	की–ओर–
H6083	H0413

> मनुष्यों और पशुओं की देहों का अंत एक ही प्रकार से होता है। वे मिट्टी से पैदा होते हैं और अंत में वे मिट्टी में ही जाते हैं। 21 कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा का क्या होता है। वे मिट्टी से पैदा होते हैं और अंत में वे मिट्टी में ही समा जाते हैं।

הַיֹּרֶדֶת	הַבְּהֵמָה	וְרוּחַ	לְמַעְלָה	הִיא	הָעֹלָה	הָאָדָם	בְּנֵי	רוּחַ	יוֹדֵעַ	מִי	21
जो–उतरती–है	पशु–की	और–साँस	ऊपर	वह	जो–चढ़ती–है	मनुष्य–के	पुत्रों–की	साँस	जानता–है	कौन	
H3381	H0929	H7307	H4605	H1931	H5927	H0120		H7307	H3045	H4310	

לָאָרֶץ׃	לְמַטָּה	הִיא
पृथ्वी–को	नीचे	वह
H0776	H4295	H1931

> कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा का क्या होता है? क्या कोइ जानता है कि एक मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के पास जाती है जबकि एक पशु की आत्मा नीचे उतरकर धरती में जा समाती है?

הִוא	כִּי־	בְמַעֲשָׂיו	הָאָדָם	יִשְׂמַח	מֵאֲשֶׁר	טוֹב	אֵין	כִּי	וְרָאִיתִי	22
यही	क्योंकि–	अपने–कार्यों–में	मनुष्य	आनन्दित–हो	इससे–कि–	भलाई	नहीं–है	कि	और–मैंने–देखा	
H1931		H4639	H0120	H8055			H0369		H7200	

אַחֲרָיו׃	שֶׁיִּהְיֶה	בְּמָה	לִרְאוֹת	יְבִיאֶנּוּ	מִי	כִּי	חֶלְקוֹ
उसके–बाद	जो–होगा	क्या–में	देखने–को	उसे–लाएगा	कौन	क्योंकि	उसका–भाग
	H1961	H4100	H7200	H0935	H4310		

> सो मैंने यह देखा कि मनुष्य जो सबसे अच्छी बात कर सकता है वह यह है कि वह अपने कर्म में आनन्द लेता रहे। बस उसके पास यही है। किसी व्यक्ति को भविष्य की चिन्ता भी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि भविष्य में क्या होगा उसे देखने में कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।